

## शिक्षक प्रशिक्षुओं में समय प्रबंध योग्यता का अध्ययन

\*<sup>1</sup> डॉ. शिवेन्द्र सिंह चन्देल

\*<sup>1</sup> सहा० प्रो० (बी०ए८०) राठ महाविद्यालय पैठाणी पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत।

### Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 05/ June/2025

Accepted: 06/July/2025

### सारांश:

“समय एक ऐसा संसाधन है जो किसी के लिए नहीं रुक सकता।”

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी और तीव्र परिवर्तन का युग है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए समय प्रबंध एक अलग आवश्यक योग्यता बन गई है विद्यार्थियों से लेकर शिक्षकों गृहणियों से लेकर कर्मचारियों और प्रशासनिक अधिकारियों तक सभी के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे अपने समय का सुनियोजित और प्रभावी उपयोग करें। आज तेज रफ्तार जीवनशैली बहुकार्य प्रणाली और डिजिटल माध्यमों के व्यस्तता के कारण समय का दुरुपयोग आम होता जा रहा है जिससे तनाव कार्यभार और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं। प्रस्तुत शोधपत्र भावी शिक्षकों में समय प्रबंधन दक्षता की माप करता है तथा बी०ए८० शिक्षक व शिक्षिका प्रशिक्षुओं में समय प्रबंधन योग्यता की तुलना करता है। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि 67 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षु अच्छी समय प्रबंधन योग्यता रखते हैं जबकि 33 प्रतिशत ही उल्कृष्टसमय प्रबंधन योग्यता रखते हैं। इसके साथ ही जब शिक्षक व शिक्षिका प्रशिक्षुओं की समय प्रबंधन योग्यता की तुलना की गयी तो दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शिक्षक व शिक्षिका प्रशिक्षुओं की समय प्रबंधन योग्यता में कोई अन्तर न करते हुए सभी में उल्कृष्ट समय प्रबंधन योग्यता विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

**मुख्य शब्द:** बी०ए८०, शिक्षक प्रशिक्षु, समय प्रबंधन योग्यता

### \*Corresponding Author

डॉ. शिवेन्द्र सिंह चन्देल

सहा० प्रो० (बी०ए८०) राठ महाविद्यालय  
पैठाणी पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत।

### प्रस्तावना:

वर्तमान शैक्षिक परिवर्ष में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं है बल्कि वह एक मार्गदर्शक मूल्य प्रेरक और व्यवस्थापक के रूप में भी कार्य करता है। शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे अपने प्रशिक्षण काल के दौरान ही ऐसी दक्षताओं का विकास करें जो उन्हें एक प्रभावी और अनुशासित शिक्षक बनने की दिशा में अग्रसर करें, ऐसी ही एक महत्वपूर्ण दक्षता है समय प्रबंधन दक्षता। समय प्रबंधन का आशय है उपलब्ध समय का विवेकपूर्ण और योजनावद्ध तरीके से पूर्णता सुनिश्चित करना समय प्रबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम कार्य की प्राथमिकताएं तय करते हैं और समय को योजनावद्ध तरीके से बांटते हैं तथा उपलब्ध समय का अधिकतम उपयोग करते हैं। यह व्यक्तिगत शैक्षणिक व्यावसायिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों में सफलता की कुंजी है। एक शिक्षक प्रशिक्षु को अध्ययन, अभ्यास, कार्यशालाओं, परियोजना कार्यों तथा पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए अपनी भूमिका का निर्वहन करना होता है, यदि वह समय का समुचित प्रबंधन नहीं करता है तो न केवल उसका व्यक्तिगत विकास बाधित होता है बल्कि वह पेशेवर अपेक्षाओं पर भी खरा नहीं उत्तर पाता। आज की प्रतिस्पर्धात्मक एवं

जटिल शैक्षिक प्रणाली में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे भावी शिक्षकों के समक्ष समय प्रबंधन एक चुनौती बनता जा रहा है। असंगठित दिनचर्या, तकनीकी व्याकुलताएं, समय का अनावश्यक अपव्यय तथा कार्यों को टालने की प्रवृत्ति प्रशिक्षुओं के समय प्रबंधन कौशल को प्रभावित कर रही है ऐसे में यह जानना आवश्यक होता जा रहा है कि प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे इन शिक्षकों में समय दक्षता की वर्तमान स्थिति क्या है वे किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं, तथा किन उपायों द्वारा दक्षता को और सुटृट बनाया जा सकता है। अतः इस शोध का प्रमुख उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षुओं में समय प्रबंधन दक्षता के स्तर का पता लगाना तथा भावी शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया में इस दक्षता को शामिल करने के प्रति जागरूकता लाना है।

### अध्ययन की आवश्यकता

21वीं शताब्दी में शिक्षा का स्वरूप तीव्रता से बदल रहा है, शिक्षकों से अब केवल विषय ज्ञान की अपेक्षा नहीं की जाती बल्कि उन्हें एक संगठित समयबद्ध और परिणामोन्मुखी दृष्टिकोण के साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में समय प्रबंधन दक्षता एक अनिवार्य गुण बन चुका है विशेष रूप से प्रशिक्षुओं के लिए जो भविष्य में शिक्षा प्रणाली की रीढ़ बनने वाले हैं। शिक्षक प्रशिक्षण

संस्थानों में अध्ययन, शिक्षण अभ्यास, परियोजना निर्माण, पाठ्य सहगामी गतिविधियों तथा मूल्यांकन संबंधी अनेक कार्य होते हैं, जिन्हें सीमित समय में पूर्ण करना होता है। प्रशिक्षुओं के समक्ष समय की कमी, टालमटोल, अनुशासनहीनता और असंगठित दिनचर्या जैसी समस्याएं सामान्य रूप से देखी जाती हैं। यदि इन समस्याओं पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो यह उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है, विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि समय प्रबंधन कौशल रखने वाले प्रशिक्षु अधिकतर संतुलित तनाव मुक्त और उत्पादक होते हैं, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर यह देखा गया है कि अधिकांश प्रशिक्षु समय को तो समझते हैं परन्तु उसकी प्रभावी उपयोग करने में असफल रहते हैं इस असंतुलन का कारण योजना निर्माण की कमी, आत्मनियंत्रण की कमी, प्रेरणा का अभाव या कार्य की प्राथमिकताएं तथा न कर पाना हो सकता है। यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इससे यह ज्ञात किया जा सकता है कि वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षुओं की समय प्रबंधन की दक्षता का स्तर क्या है और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है इसके अतिरिक्त यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करेगा कि क्या स्कूल के क्रियाकलाप और पाठ्यक्रम जैसे कारण समय प्रबंधन दक्षता को प्रभावित करते हैं या नहीं। इसके द्वारा संस्थानों को यह दिशा प्राप्त हो सकती है कि वे किस प्रकार अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम में समय प्रबंधन से संबंधित कार्यशालाएं, अभ्यास कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान शामिल कर सकते हैं। समय प्रबंधन दक्षता का विकास न केवल प्रशिक्षुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा बल्कि इससे विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में भी सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

अतः यह अध्ययन आवश्यक है ताकि शिक्षक प्रशिक्षुओं के समय प्रबंधन कौशल की पहचान कर उन्हें संगठित, दक्ष एवं प्रभावशाली शिक्षक बनने की दिशा में मार्गदर्शन दिया जा सके। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध हेतु निम्नलिखित समस्या का चयन किया है-

“शिक्षक प्रशिक्षुओं में समय प्रबंधन दक्षता का अध्ययन करना”

### प्रत्ययों का स्पष्टीकरण:

- शिक्षक प्रशिक्षु:** शिक्षक प्रशिक्षु वे व्यक्ति होते हैं, जो किसी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसे बी०ए८० (बैचलर आ०फ एजुकेशन) डी०ए८०ए८० (डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन) या अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हो, वहीं भावी शिक्षक होते हैं ताकि वे आने वाले समय में विद्यालयों या अन्य शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षक की भूमिका का निर्वहन कर सके।
- समय प्रबंधन योग्यता:** उपलब्ध समय का विवेकपूर्ण, योजनाबद्ध और प्रभावी उपयोग करने की योग्यता किसी व्यक्ति को अपने दैनिक कार्यों, दायित्वों और लक्ष्यों को समय पर कुशलतापूर्वक बिना तनाव के पूरा करने में मदद करती है। इस प्रकार समय प्रबंधन दक्षता का अर्थ है अपने समय का इस प्रकार से उपयोग करना कि सभी कार्य समय पर उचित क्रम में और सर्वोत्तम परिणाम के साथ पूरे हो सके।

### संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

मिश्र आर एवं मैकमिन एम० (2000) ने संयुक्त राज्य अमेरिका की पेसिलवेनिया राज्य विश्वविद्यालय में महाविद्यालयों की विद्यार्थी में शैक्षिक तनाव समय प्रबंधन और अवकाश संतुष्टि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि समय प्रबंधन दक्षता और कम तनाव के बीच मजबूत सम्बन्ध है जो छात्र समय का अच्छा प्रबंधन करते हैं वे कम तनाव महसूस करते हैं।

कुमार, ए० (2018) ने भारत में बिहार राज्य के पटना जिले में स्नातक छात्रों में समय प्रबंधन कौशल और अकादमिक प्रदर्शन का अध्ययन

किया अध्ययन से पता चला कि जिन छात्रों में उच्च समय प्रबंधन दक्षता थी उनके ग्रेड भी बेहतर थे।

शर्मा, आर० एवं सिंह, एन० (2020) ने राजस्थान के जयपुर जिले के महाविद्यालयों में छात्रों के लिंग के अनुसार समय प्रबंधन दक्षता के अंतर का अध्ययन किया इस अध्ययन में 200 छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया और निष्कर्ष रूप में पाया गया कि छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा समय प्रबंधन दक्षता अधिक थी। साथ ही यह दक्षता आत्मनियंत्रण और योजनाबद्धता से जुड़ी पाई गयी।

सुकुमारन, जी०बी० ए८८ गीथा, सी० (2000) ने भारत के तमिलनाडु राज्य के कांचीपुरम में बी०ए८० छात्रों पर एक अध्ययन किया जिसमें कांचीपुरम जिले में बी०ए८० कॉलेज विद्यार्थियों में शैक्षणिक तनाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में कुल 100 बी०ए८० छात्र-छात्राओं को सरल यादचिक विधि द्वारा चयनित किया गया। इसके परिणामों से स्पष्ट हुआ कि इन छात्रों में मध्यम स्तर का शैक्षणिक तनाव पाया गया जब तनाव के कारणों को खोजा गया तो पता चला कि शैक्षणिक तनाव के उच्च स्तर का एक प्रमुख कारण समय का अनुचित प्रबंधन था। यह अध्ययन सुझाव देता है कि बी०ए८० जैसे पेशेवर पाठ्यक्रमों में पढ़ रहे छात्रों के लिए समय प्रबंधन प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे तनाव को नियंत्रित कर सके और अपने अकादमिक प्रदर्शन को बेहतर बना सकें।

बेलकर, एट. अंक. (2022) ने महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले के लोनिया क्षेत्र के विभिन्न महाविद्यालय के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन में समय प्रबंधन की भूमिका का अध्ययन किया इस शोध में यह निष्कर्ष निकला कि नियमित दिनचर्या कार्यसूची और समय का प्रबंधन करने वाले छात्र बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में समय प्रबंधन के व्यवहारिक पक्ष को दर्शाता है।

सिंह, ए० (2023) ने भारत में 120 विश्वविद्यालयी छात्रों पर ओपन एक्सेस स्टडी की यह विश्वविद्यालय में छात्रों के समय प्रबंधन सरल बौद्धिमत्ता और अकादमिक प्रदर्शन के बीच संबंध को उजागर करता है शोध में पाया गया कि जिन छात्रों की समय योजना बेहतर थी वे मानसिक रूप से सक्षम और शैक्षणिक रूप से सफल पाए गए। यह अध्ययन बताता है कि समय प्रबंधन केवल आदत नहीं बल्कि बौद्धिक क्षमता से भी जुड़ा होता है।

शर्मा, आर० एवं दूबे, पी० (2024) ने समय प्रबंधन और उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया यह अध्ययन भारत के मध्य प्रदेश राज्य के भोपाल जिले के बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय में किया गया इस अध्ययन में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के 300 विद्यार्थियों को शामिल किया गया था इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह जानना था कि विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर क्या प्रभाव पड़ता है निष्कर्ष से ज्ञात हुआ है कि जिन विद्यार्थियों ने पूर्व नियोजित अध्ययन रणनीतियां अपनाई जैसे की समय सारणी बनाना, पढ़ाई के लिए निश्चित धंटे निर्धारित करना और समय पर पुनरावृत्ति करना वे सभी परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त किये। समय के यथार्थ मूल्यांकन की आदत रखने वाले विद्यार्थियों ने तनाव और चिंता में कमी का अनुभव किया इसके साथ-साथ यह भी पाया गया कि नियमित समय प्रबंधन करने वाले विद्यार्थियों अपनी पढ़ाई के प्रति अधिक जागरूक और आत्मविश्वासी थे। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि समय प्रबंधन दक्षता उच्च शिक्षा में सफलता की कुंजी है।

झांग, एट अल. (2025) ने चीन के शोडोंग प्रांत में स्थित विभिन्न विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से आंकड़ा एकत्र करने के लिए ऑनलाइन माध्यम से प्रश्नावली भरवाई इस अध्ययन में चीन के स्नातक छात्रों में समय प्रबंधन, आत्मनियंत्रण, मोबाइल फोन निर्भरता और शैक्षणिक संलग्नता के बीच अंतर संबंध की जांच की गई जिसमें पाया गया कि समय प्रबंधन का सकारात्मक प्रभाव सीधे पढ़ाई में रूचि पैदा करती है और यह आत्मनियंत्रण को बढ़ावा देता

है जब कि मोबाइल निर्भरता को कम करता है जिससे अध्ययन में बेहतर संलग्नता होती है यह शोध छात्रों की शिक्षा और ध्यान संचालित डिजिटल युग में समय प्रबंधन की भूमिका को उजागर करता है।

### शोध के उद्देश्य

- बी0एड0 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में समय प्रबंधन योग्यता का अध्ययन करना।
- बी0एड0 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षिका प्रशिक्षणार्थियों में समय प्रबंधन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### शोध परिकल्पना

- सभी बी0एड0 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में समय प्रबंधन योग्यता उच्च स्तर की होगी।
- सभी बी0एड0 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में पुरुष प्रशिक्षणार्थी व महिला प्रशिक्षणार्थी की समय प्रबंधन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

### शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध में शोध करता द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जिले में स्थित राठ महाविद्यालय पैठाणी के केवल बी0एड0 प्रशिक्षुओं को अध्ययन में शामिल किया गया है।

### शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक शोध तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

### शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में समय प्रबंधन दक्षता का मापन करने के लिए डॉ. डी0 सनसनवाल और मीनाक्षी पराशर द्वारा निर्मित व मानकीकृत समय प्रबंधन दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया है।

### जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी है अध्ययन की सुविधा हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जिले में स्थित राठ महाविद्यालय पैठाणी के 150 बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी में से 100 प्रशिक्षणार्थियों को जिसमें 50 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एवं 50 शिक्षिका प्रशिक्षणार्थी को अध्ययन में यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके चुना गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी- प्रस्तुत शोध में आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है-

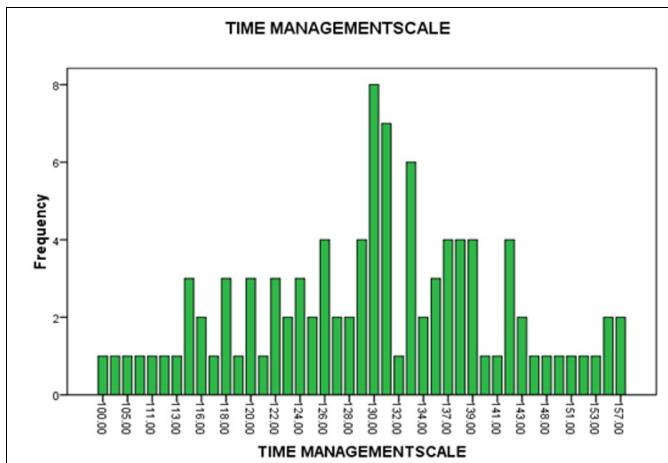
- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या- शिक्षक प्रशिक्षणुओं में समय प्रबंधन दक्षता का अध्ययन करने के उद्देश्य से राठ महाविद्यालय पैठाणी पौड़ी गढ़वाल से बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों सत्र 2023-25 से 150 प्रशिक्षणार्थियों में से 100 प्रशिक्षणार्थियों को जिसमें 50 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी तथा 50 शिक्षिका प्रशिक्षणार्थी को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया फिर समय प्रबंधन मापनी को उन पर प्रशासित कर आंकड़ों को प्राप्त किया गया और उद्देश्यों के अनुकूल उनका विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार से है-

तालिका 1: 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के प्राप्तांकों का आवृत्ति विवरण

प्राप्तांक	आवृत्ति (शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संख्या)
100	01
102	01
105	01
110	01
111	01
112	01
113	01
114	03
116	02
117	01
118	03
119	01
120	03
121	01
122	03
123	02
124	03
125	02
126	04
127	02
128	02
129	04
130	08
131	07
132	01
133	06
134	02
136	03
137	04
138	04
139	04
140	01
141	01
142	04
143	02
145	01
148	01
150	01
151	01
152	01
153	01
154	02
157	02
Total	100

उपरोक्त तालिका में वर्णित प्राप्तांक और उनकी आवृत्ति को चित्र संख्या 01 में प्रदर्शित किया गया है।



चित्र-1: प्राप्तांको की आवृत्ति वितरण का बार चित्र

प्रस्तुत शोध मे प्रयुक्त डॉ. डी०एन सनसनवाल और मीनाक्षी पंराशर की समय प्रबंधन योग्यता मापनी के मनाक के अनुसार प्राप्तांको की व्याख्या निम्नवत है-

तालिका 2: प्राप्त प्राप्तांक और परिणाम की व्याख्या

प्राप्तांक	व्याख्या
45 प्राप्तांक तक	बहुत खराब समय प्रबंधन योग्यता
45 से 90 प्राप्तांक के मध्य	खराब समय प्रबंधन योग्यता
90 से 135 प्राप्तांक के मध्य	अच्छी समय प्रबंधन योग्यता
135 से ऊपर प्राप्त प्राप्तांक	उत्कृष्ट समय प्रबंधन योग्यता

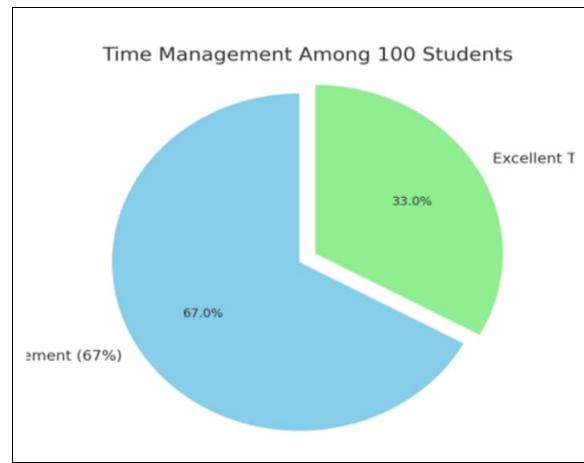
इस प्रकार 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के प्राप्तांकों के आधार पर उनके समय प्रबंधन योग्यता की स्थिति निम्नवत प्राप्त हुई-

तालिका 3: परिकल्पना

प्राप्तांक	शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संख्या	समय प्रबंधन की स्थिति
45 प्राप्तांक तक वाले	0	-
45 से 90 प्राप्तांक के मध्य वाले	0	-
90 से 135 प्राप्तांक के मध्य वाले	67	अच्छी समय प्रबंधन योग्यता
135 से ऊपर प्राप्त प्राप्तांक वाले	33	उत्कृष्ट समय प्रबंधन योग्यता

तालिका 03- के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन मे शामिल किये गये 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों मे ऐसा कोई भी शिक्षक प्रशिक्षणार्थी नही है जिनकी समय प्रबंधन योग्यता बहुत खराब हो बल्कि 100 में 67 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता अच्छी पाई गयी, जबकि 33 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता उत्कृष्ट पाई गयी। इस प्रकार शोध की प्ररिकल्पना 1. सभी प्रशिक्षणार्थियों मे समय प्रबंधन योग्यता उच्च स्तर की होगी निरस्त होती है। सभी की नही बल्कि मात्र 33 फीसदी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता उच्च स्तर की पाई गई जबकि 67 फीसदी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता अच्छी पाई गई परन्तु उत्कृष्ट से कम पाई गई। अध्ययन मे यह भी पाया गया कि किसी भी प्रशिक्षणार्थी की समय प्रबंधन योग्यता खराब यह बहुत खराब नही पाई गयी।

आंकड़ों से प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता निम्न चित्र द्वारा देखा जा सकता है।



चित्र 02: शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों कि समय प्रबंधन योग्यता की स्थिति को दर्शाता हुआ चार्ट-

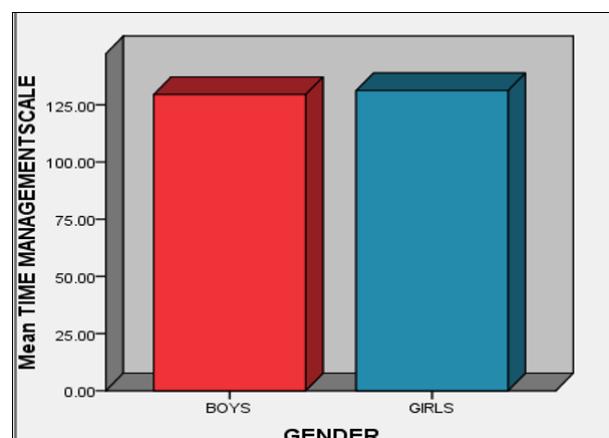
जब 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों मे 50 शिक्षक व 50 शिक्षिका प्रशिक्षणार्थी की समय प्रबंधन योग्यता की तुलना की गई तो परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए।

तालिका 4: शिक्षक व शिक्षिका प्रशिक्षणार्थी की समय प्रबंधन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	चारदर्शी की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी. मान	मध्यमान अन्तर	पी.मान
शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	50	129.50	12.80	.740	1.74	.208
शिक्षिका प्रशिक्षणार्थी	50	131.24	10.59			

सारणी मान- .05-1.98  
.01-2.62

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता का मध्यमान 129.50 तथा प्रामाणिक विचलन 12.80 है जबकि शिक्षिका प्रशिक्षणार्थियों की समय प्रबंधन योग्यता का मध्यमान 131.24 तथा प्रामाणिक विचलन 10.59 है इस प्रकार महिला प्रशिक्षणार्थी पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की तुलना में अधिक समय प्रबंधन योग्यता रखती हैं, इस प्रकार के परिणाम चित्र 3 में दर्शाये गये हैं



चित्र-3: पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के समय प्रबंधन योग्यता का मध्यमान के आधार पर बार चित्र

परन्तु जब पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी के समय प्रबंधन योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से टी परीक्षण लगाया गया तो टी का मान .740 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के आधार पर .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 तथा .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.62 से बहुत कम है अतः टी का मान .01 तथा .05 दोनों ही स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित नहीं करता इसकी पुष्टि पी.मान .208 से भी होती है जो .05 से अधिक है जो कि सार्थक अन्तर को बताता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना- बी0एड0 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के समय प्रबंधन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा- सत्य सिद्ध होती है अतः हम कह सकते हैं कि पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी के समय प्रबंधन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अर्थात लिंग समय प्रबंधन योग्यता को प्रभावित नहीं करता है।

## References

1. Misra R, McLean M. College student's Academic stress and its relation to their anxiety time management and leisure satisfaction. American journal of health studies. 2000; 16(1):41-51.
2. Kumar A. A study of time management skills among undergraduate students in relation to their academic achievement. Journal of Educational Research and Administration. 2018; 12(1):45-52.
3. Sharma R, Singh N. Gender difference in Time management skills among college students. Journal of Indian Psychology. 2020; 38(2):66-74.
4. Sukumaran VG, Geetha G. A study on academic students among B.Ed. college students in Kancheepuram District. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research. 2020; 6(6):562-567.
5. Belkar. et al Effective time management in the academic and achievement of students International journal of advance research and Innovative Ideas in Education(IJARIE). 2022; 8(6):1010-1018.
6. Singh A. Time Management Fluid intelligence and Academic Achievement. Psychological studies. 2023; 6(9):59-68.
7. Sharma R, Dubey P. Time management and its relation to academic achievement among higher Education students. Bhartiya shiksha Samiksha. 2024; 48(2):112-125. [https://dai.org/101234/bss.v48i2. 5678](https://dai.org/101234/bss.v48i2.5678)
8. Zhang L. et al. Unlocking academic Success: the impact of time management and college students studies engagement. BMC Psychology, 13. Article 323. <http://doi.org/10.1186/540359-025>